शोध मंथन Vol. XII No.IV Oct.-Dec. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

बिजनौर जनपद की बोली का विकास एवं खड़ी बोली के विकास में उसका योगदान

प्राप्तिः 27.10.2021
स्वीकृतः 26.12.2021

डा० शुभा माहेश्वरी
एसोसिऐट प्रोफेसर, अध्यक्ष हिंदी विभाग
साहू जैन कॉलेज, नजीबाबाद
ईमेलः *maheshwari.shubha@gmail.com*

सारांश

बिजनौर जनपद उत्तर–प्रदेश के पश्चिमी उत्तरी भाग का गंगा पूर्व का अन्तिम मैदानी जनपद है जो लगभग 800 कि0मी0 की लम्बाई में हिमाचल पर्वत की शिवालिक श्रंखलाओं को स्पर्श करता है।

जनपद में तीन बार अलग–अलग समूहों में आए जाटां के द्वारा तथा मुस्लिम शासकों की उर्दू भाषा के द्वारा यहॉ की बोली विशिष्ट हो गई। खड़ी–बोली के अन्य जनपदों की अपेक्षा सर्वाधिक जातियों का पुनर्वास बिजनौर जनपद में हुआ इसीलिए यहॉ की बोली को राज–भाषा होने का भी गौरव प्रदान किया गया यहॉ की खड़ी–बोली को प्रभुतासम्पन्न बनाने में पर्याप्त सहायक बनी है। जनपद की, खड़ी बोली को महत्व प्रदान करने में आर्य समाज का भी हाथ रहा है। वस्तुतः बिजनौर जनपद है। वस्तुतः बिजनौर जनपद की खड़ी–बोली का शुद्व विकसित रूप ही हिन्दी है।

मुख्य बिन्दु

1. बिजनौर जनपद की बोली का विकास
2. जाटों का प्रभाव
3. उर्दू का प्रभाव
4. जनपदीय साहित्यिक श्रेष्ठता
5. जनपदीय धार्मिक श्रेष्ठता

बिजनौर जनपद उत्तर प्रदेश के पश्चिमी–उत्तरी भाग का गंगा पूर्व का अन्तिम मैदानी जनपद है जो लगभग 800 कि0मी0 की लम्बाई में हिमाचल पर्वत की शिवालिक श्रंखलाओं को स्पर्श करता है। 29.10 डिग्री उत्तरी, 29.98 डिग्री उत्तरी अक्षाशों तथा 78.00 डिग्री पूर्वी तथा 78.89 डिग्री पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित बिजनौर जनपद में सर्वत्र खड़ी बोली जाती है। जनपद में खड़ी–बोली के प्रवेश का इतिहास इस जिले में जाट जाति के प्रवेश के साथ जुड़ा हुआ है। जाटों के प्रवेश से पूर्व खड़ी–बोली यमुना और गंगा के बीच के मेरठ, मुजफ्फरनगर और सहारनपुर जिलों में विकसित हो चुकी थी। इसीलिए इसका प्रभाव जाटों के आगमन से पूर्व ही अनुभव किया जाने लगा। जाटों से पूर्व अहीर, चौहान और गूजर आदि जो जातियॉ गंगा–पार के क्षेत्रों से आकर यहॉ बसीं, वे भी दोआब की खड़ी–बोली के प्रभाव को अवश्य साथ लायी होंगी । परन्तु खडी–बोली में उल्लेखनीय

परिर्वतन जाट जाति के यहॉ आकर बसने के बाद ही हुआ। ये जाट अलग–अलग समय में तीन दलों में आये और पूरे जनपद में फैल गयें। चौदहवीं शती में किसी समय जाटों के एक समूह ने मुजफ्फरनगर के भोकर हेड़ी गॉव से अथवा वहॉ होकर और गंगा का रावलीघाट पार करके इस जिले में प्रवेश किया। इस दल ने चॉदपुर से मंडावर तक, जहॉ भी खेती योग्य जमीन मिली, अपना निवास बना लिया। बिजनौर (तत्कालीन गॉव मात्र) इनका प्रमुख केन्द्र था ।

जाटों का दूसरा समूह – जिसमें साहनपुर रियासत के जाट भी सम्मिलित थे– रोहतक जिले से बहादुरगढ़ दिल्ली, बुलन्दशहर, गढ़–मुक्तेश्वर के मार्ग से इस जिले में पहले दल से लगभग सौ–डेढ़ सौ वर्ष बाद आया। ये लोग मंडावर के उत्तर में उन भागों में बस गये, जहॉ जाट अब तक नहीं गये थे और जो खेती के लिए रिक्त थे ।

जाटों का तीसरा दल अठारवीं शती में जींद, सिरसा और पटियाला आदि जिलों से चल कर सम्भवतः गढ़–मुक्तेश्वर के घाट से गंगा पार करके आया और ये लोग खेती के लिए रिक्त भूमि पाकर मुरादाबाद जिले के गजरौला से लेकर इस जिले के चॉदपुर कस्बे तक बस गये ।

इन तीनों जाट दलों के आगमन के परिणामस्वरूप इस जिले की बोली दोआब के जिलों की भॉति खड़ी हो गई ।

इस जिले की बोली पर मध्य–काल में दिल्ली से आये मुसलमान–शासकों, सैनिकों तथा अमलों का भी प्रभाव पड़ा। मध्य–काल में यह जिला दिल्ली से निष्कासित पठानों, भगोडों, विद्रोहियों और अपना भाग्य आजमाने के लिए आने वाले मुस्लिम तत्वों का शरण–स्थल रहा। नजीबुददौला ने बिजनौर पर कब्जा कर 1753 ई0 में नजीबाबाद शहर की स्थापना की। तत्कालीन समस्त पुस्तके उर्दु में लिखी गई (1)। 1801 ई0 में जिले में अंग्रजी शासन की स्थापना तक मुस्लिम लोग अपना अधिकार जमाते रहे। यह लोग दिल्ली से परिष्कृत खड़ी–बोली लेकर यहॉ आये। बिजनौर जनपद के दक्षिण–पूर्व में स्थित रामपुर रियासत तो उर्दू जबान और उदब का लगभग सौ वर्षो तक बड़ा केन्द्र रही। मुसलमानी प्रभाव के निकटतम होने के कारण इस जनपद की ग्रामीण खडी–बोली में भी फारसी–अरबी के शब्दों का व्यवहार अधिक हुआ, किन्तु ये प्रायः अर्द्ध तत्सम अथवा तद्भव रूपों में प्रयुक्त होते रहे। इन्ही को तत्सम रूप में प्रयुक्त करने से खड़ी–बोली में उर्दू की झलक आयी, किन्तु उनमें ध्वन्यात्मक परिवर्तन हो गये हैं। जैसे –"मतलब" को यहॉ "मतबल" "खालिस" को "निखालिस" "बादशाह" को "बास्सा" "नुस्खा"को "नुक्सा" "इकट्ठा को "कट्ठा" आदि बोला जाता है। इस बोली में लोक –साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलता है जबकि आभिजात्य साहित्य का निर्माण इस प्रदेश में पहले ब्रज भाषा के अन्तर्गत होता था और आजकल परिनिष्ठित एवं साहित्यिक हिन्दी में होता है (2)।

इस प्रकार जिले की खड़ी–बोली के निर्माण में मुसलमानों की परिष्कृत खड़ी–बोली और उनकी साहित्यिक भाषा उर्दू का बड़ योगदान रहा। इसी कारण यहॉ की खड़ी–बोली में वह कठोरता और पौरूख नहीं रहा, जो कि मेरठ, मुजफ्फरनगर की बोली में है। जिले की बोली में कोमलता का पुट उर्दू की ही देन है। इसीलिए आज भी बिजनौर जिले की बोली दोआब की खड़ी–बोली की तुलना में खड़ी–बोली हिन्दी (साहित्यिक रूप) के अधिक निकट है। इसीलिए यहॉ की बोली को ही "खड़ी–बोली की मूल बोली" कहना उचित जान पड़ता है। मैक्समूलर ने ठीक ही कहा था कि बोलियॉ साहित्यिक भाषा के निर्माण से पूर्व विद्यमान रहती है, क्योंकि प्रत्येक साहित्यिक भाषा के मूल में एक बोली ही है ,जो क्रमशः विकसित होकर उस रूप को प्राप्त करती है ।

निष्कर्षतः खड़ी–बोली का प्रभाव इस जिले मे पश्चिम (गंगा–पार, मेरठ, मुजफ्फरनगर जिले) तथा दक्षिण (मुरादाबाद, रामपुर जिले) दोनो रास्तों से आया। प्रथम प्रभाव से जहॉ ग्रामीण खड़ी–बोली आयी, दूसरे प्रभाव से परिष्कृत और परिमार्जित खड़ी–बोली आयी। दोनों प्रभावों ने मिलकर इस जिले की विशिष्ट बोली का विकास किया ।

बिजनौर जनपद की बोली के विकास का खड़ी–बोली के विकास में विशिष्ट योगदान स्पष्ट करने के लिए खड़ी–बोली के प्रमुख क्षेत्रों का यहॉ उल्लेख करना आवश्यक है। रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर तथा देहरादून के मैदानी भागों में बोली जाने वाली जनपदीय भाषा का नाम खड़ी–बोली है। (3) इन जिलो में से रामपुर और मुरादाबाद यवन–बहुल जनपद है। इन जनपदों की भाषा में अरबी–फारसी और उर्दू का इतना अधिक प्रभाव है कि उसमें हमें खड़ी–बोली का वह रूप नही दिखाई देता, जो साहित्यिक खड़ी–बोली में विद्यमान है और जिसे आज हिन्दी कहा जाता है। मेरठ, मुजफ्फरनगर एवं सहारनपुर जाट बहुल क्षेत्र है। वहॉ की भाषा में अत्यधिक कठोरता एवं खड़ापन है जिसे साहित्यिक खड़ी–बोली में अपनाया नही गया। देहरादून के मैदानी भागो की जनपदीय भाषा ने भी खड़ी–बोली के विकास में योगदान दिया था लेकिन वहॉ की निकटवर्ती कुमायूँनी और गढ़वाली भाषा के प्रभाव के कारण खड़ी–बोली का शुद्ध स्वरूप वहॉ भी लक्षित नही होता। खड़ी–बोली क्षेत्र के जनपदों मे मात्र बिजनौर ही ऐसा जनपद है जिसने एक ओर तो अपने दक्षिण–पूर्वीय रामपुर और मुरादाबाद तथा पश्चिमी प्रदेश दिल्ली की बोली के प्रभाव से कोमलता को ग्रहण किया,दूसरी ओर मेरठ, मुजफ्फरनगर एवं सहारनपुर जिलों की बोली के प्रभाव से खरापन तो लिया परन्तु वह खड़ापन नही, जिसके कारण मेरठ, मुजफ्फरनगर एवं सहारनपुर की बोली जाट बोली कहलाई। बिजनौर जनपद की बोली पर पंजाबी प्रभाव भी इन तीन जनपदों की अपेक्षा नगण्य है। देहरादून के मैदानी भाग की बोली पर पहाड़ी बोलियों का बहुत अधिक प्रभाव है, परन्तु बिजनौर जनपद की बोली पर वह अत्यन्त अल्प है ।

इस प्रकार हम देखते है कि उपरोक्त खड़ी–बोली के क्षेत्र में मात्र बिजनौर जनपद ही एक ऐसा जनपद है जिसकी बोली ने कालान्तर में भाषा (हिन्दी) का रूप ग्रहाण किया। खड़ी–बोली के अन्य जनपदों की अपेक्षा सर्वाधिक जातियों का पुनर्वास बिजनौर जनपद में हुआ इसीलिए यहॉ की बोली को राज–भाषा होने का गौरव प्रदान किया गया क्योकि विभिन्न बोली बोलने वालों के आपसी व्यवहार के कारण ही भाषा बनती है।

जनपदीय साहित्यिक श्रेष्ठता भी यहॉ की खड़ी–बोली को प्रभुतासम्पन्न बनाने में पर्याप्त सहायक बनी है। बिजनौर जनपद की भूमि ने हिन्दी–जगत को आलोचक, पत्रकार, निबन्धकार और अनेक कवि प्रदान किये है। किसी भाषा के प्रचार और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका पत्रकारों और आलोचकों की होती है। हिन्दी पत्रकारिता का शैशव काल ही था कि धामपुर (बिजनौर) में जन्में पं0रूद्रदत्त शर्मा जी ने हिन्दी–पत्रकारिता जगत को लगभग 45 वर्षो तक अपना योग देते हुए समृद्ध किया। अम्बिका प्रसाद वाजपेयी जी के शब्दों मे "कोई ऐसा नामी हिन्दी–पत्र नहीं हुआ जिसका सम्पादन रूद्रदत्त जी ने न किया हो" (4)। मंगला प्रसाद पारितोषिक से सम्मानित, "सम्पादकाचार्य" की उपाधि से विभूषित पं0 पद्मसिंह शर्मा –हिन्दी तुलनाम्मक आलोचना के जनक, अद्वितीय संस्मरण लेखक और उत्कृष्ट निबन्धकार–की जन्मदात्री होने का गौरव भी इसी जनपद की धरती को है। हिन्दी–निबन्धों मे उर्दू के उद्धरणों और प्रचलित मुहावरों का प्रयोग आपकी देन है। पं0 बनारसी दास

चतुर्वेदी ने आपकी अद्वितीय निबन्ध–शैली की भूरि–भरि प्रशंसा की (5)। हिन्दी–लेखकों को प्रोत्सहित करके आपने खड़ी–बोली की अभूतपूर्व सेवा की। प्रसिद्ध चिन्तक और समीक्षक डॉ0 गोपीनाथ तिवारी भी इसी जनपद की विभूति हैं। इस जनपद के अन्य उल्लेखनीय हस्ताक्षरों में पं0 नरोत्तम व्यास, ब्रहमचारी शीतल प्रसाद, हरिश्चन्द्रआर्य, शान्ति चन्द्र जैन, बाबूसिंह चौहान, ईश्वरदयालु आर्य, शिवकुमार शर्मा, नैपाल सिह आर्य, उमेशचन्द्र सोती, श्री महावीर अधिकारी, फतहचन्द्र शर्मा आराधक एवं हरिदत्त शर्मा आदि के नाम प्रमुख है। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि बिजनौर ही एक मात्र ऐसा जिला है जिसकी तीन विभूतियॉ–कुर्रत उल ऐन हैदर, हरिदत्त शर्मा और बाबू सिंह चौहान– सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार से सम्मानित हो चुकी है। हिन्दी गजल सम्राट श्री दुष्यंत कुमार से भी इसी जनपद ने पूरे विश्व में गरिमा पाई है श्री रामौतार त्यागी श्री नश्तर शाही जैसे अन्य साहित्यकारों ने इस जिले को अपनी कलम देकर गौरवान्वित किया है ।

"धार्मिक श्रेष्ठता भी बोली का महत्व बढ़ा देती है...।खड़ी–बोली को महत्व प्रदान करने में आर्य समाज का भी हाथ रहा है (6)। तिवारी जी के इस कथन का पुष्ट प्रमाण बिजनौर जनपद भी है। अन्य जनपदों की खड़ी–बोली गत विशेषताओं की अपेक्षा हिन्दी में बिजनौर जनपदीय खड़ी–बोली की ही विशिष्ट प्रवृत्तियॉ अधिक वर्तमान रही है। इसका कारण यह है कि "जब किसी प्रदेश की बोली स्टैडर्ड होकर भाषा का रूप धारण कर लेती है तब आस–पास की बोलियॉ अपनी छोटी–छोटी विशेषताएँ खो बैठती है और उसी में शामिल हो जाती है। ऐसा भी होता है कि स्टैडर्ड बोली भी अपनी छोटी–छोटी विशेषताएँ छोड़ देती है (7)। यही कारण है कि बिजनौर जनपद की खड़ी–बोली में द्वित्व व्यंजन–प्रवृत्ति आदि कुछ न्यूनताएं आज तक व्यावहारिक स्वरूप में विद्यमान है लेकिन भाषा का रूप ग्रहण करने पर वे न्यूनताएँ लुप्त हो जाती हैं क्योकि साहित्यिक भाषा विशिष्ट भाषा होती है, सामान्य व्यवहार की बोली से उसका स्तर ऊँचा होता है। लेकिन इन बोलियों के ही सोपान पर चढ़कर कोइ भाषा ऊँचाई के चरम बिन्दू तक पहुँच पात है। डाॅ अग्रवाल का कथन उद्धहरणीय हैं– "मेरा तो विश्वास है कि हिन्दी बिना जनपदों की बोलियों को साथ लिये उन्नति कर ही नहीं सकती। भाषा की दृष्टि से जनपदों में, गॉवो में बेहिसाब मसाला भरा पड़ा है "(8)।

खड़ी–बोली के विकास में बिजनौर जनपद के इस विशिष्ट योगदान को स्वीकार करते हुए डॉ0 रामचन्द्र मिश्र ने कहा है– "बिजनौर की भाषा साहित्यिक हिन्दी के अधिक समीप होने के कारण परिनिष्ठित है "(9)। डॉ0 भोलानाथ तिवारी का भी यही मत है– "खड़ी–बोली का शुद्ध या परिनिष्ठित रूप बिजनौर में बोला जाता है। अन्य स्थानों पर प्रायः समीपवर्ती भाषाओं का प्रभाव परिलक्षित होता है...। खड़ी–बोली का यही रूप राज्य या राष्ट्र भाषा बना" (10)।

निष्कर्ष यह है कि वस्तुतः बिजनौर जनपदीय खड़ी–बोली का शुद्ध विकसित रूप ही हिन्दी है।

सन्दर्भ

1. खॉ सर सैयद अहमदः सरकशीए जिल बिजनौर, पृ0 73
2. सकसेना, डॉ0 द्वारिका प्रसारः हिन्दी भाषा का विकासात्मक इतिहास, पृ0 72
3. सुमन, डा0 अम्बा प्रसादः हिन्दी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप, पृ0 134
4. समाचार पत्रों का इतिहास, पृ0 143, वर्धमानपत्रिका पृ0 48 से उद्धृत ।

5. दैनिक बिजनौर टाईम्स, 14 नवम्बर, सन्! 1976, पृ0 5
6. डॉ0 भोलानाथः भाषा विज्ञान कोश, पृ0 461
7. सक्सेना, डॉ0 बाबूरामः सामान्य भाषा – विज्ञान, पृ0 119
8. अग्रवाल, डॉ0 वासुदेव शरणः पृथ्वीपुत्र, पृ0 150, कु0 ऊषारानीः नूतन साहित्यिक निबन्ध, पृ0 245 से उद्धृत
9. हिन्दी की उपभाषाऍं और ध्वनियॉं, अध्याय 3 पृ0 13
10. भाषा विज्ञान कोश, पृ0 183–184